राधास्वामी संत संदेश

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 7 अंक : 80 15 दिसम्बर 2003

सदस्यता शुल्क : ——— भारत, नेपाल व सिक्किम में

वार्षिक : रुपए 40/- एक प्रतिः रुपए 5/-

इस अंक में

1. बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग 2
2. ध्यानाकर्षण बिन्दू व सूचना 36
3. जीवों की बीमारी क्यों होती है?(महर्षि शिवव्रतलाल जी) 37
4. अनमोल वचन 38
5. ज्ञान-सार 38
6. स्वास्थ्य स्तम्भ (औषधि प्रयोग) 39
7. सत्संग सार (हिसार, 28.12.03) 40
8. सतगुरु कृपा 42
9. सेवादारों के लिए सूचना 44

राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित

फोन नं. : **01664-241570** (भिवानी आश्रम)
01664-265094 (दिनोद आश्रम)

वेबसाइटः- **www.radhaswamidinod.org**

इ-मेलः- **info@radhaswamidinod.org**

बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग

भिवानी कैसेट क्रमांक..... 89

दिनांक 30.8.92

समय ..... प्रातः

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!
राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!

प्रेमियो, सत्संगियो, माताओ और बहनों! अगर कोई दुख और तकलीफ आती है तो यह सोच लो कि यह मालिक की भेजी हुई है और हमारे कर्म ही कट रहे हैं। मालिक के बिना हमारा साथी भी कौन है? संसार में और कोई भी नहीं, एक दुख ही साथी है। तुम सभी चीजों के लिए भाग दौड़ करते रहते हो। मकान के लिये कितनी कोशिश करते हो। बच्चों की खातिर कोशिश करनी पड़ती है तभी जाकर लायक बनते हैं। जमीन, जायदाद किसी को ले लो, उस के लिए कोशिश करनी पड़ती है। विद्या के लिये कोशिश करनी पड़ती है। सभी के लिए कोशिश करने पर ही ये आते हैं पर दुख तो ऐसा साथी है जो अपने आप ही आ जाता है। सो पास आता है तो उसका आदर करके ही रखना चाहिए। दुख का कभी निरादर मत करो। यह समझो कि यह हमारा पुराना साथी है। पुराने साथी को देखकर खुश हो जाओ।

मैं अपनी बातें बताता हूं। अगर हम दुख से प्यार करें तो हमारा उद्धार जल्दी ही हो जाए। कबीर साहब ने तो दोहे कहे हैं। मैं तो दोहे बनाना नहीं जानता। पर मैं बता सकता हूं कि दुख से इतने लाभ हैं। कबीर जी के दोहे कहते हैं—

दुख में सुमरन सब करैं, सुख में करैं न कोय।
जो सुख में सुमरन करें, तो दुख काहे को होय।।

सुख में सुमरन ना किया, दुख मे कीन्हा याद।
कहैं कबीर ता दास की, कौन सुने फरियाद।।

सुख में याद किया नहीं फिर फरियाद कौन सुनेगा? यही मैं कहूंगा। मुझे सम्वत् का (वर्ष का) तो पता नहीं है। न मुझे सन् का पता है। कई तो नाम लेने का वर्ष भी याद रखते हैं। वैसे सम्वत् या सन् लिख लेना चाहिए। मुझे सन् का तो पता नहीं है यह पता है कि सम्वत् तीन का था। बसंत पंचमी का दिन था, सांय को मुझे नाम मिला था। शाम को हम गए तो दो तीन आदमी साथ में थे। महाराज जी ने नाम दान दिया था। नाम दान लिया तभी मुझे तसल्ली हुई थी कि संतमत भी कोई चीज है। नहीं तो मैं एक लंगोटीधारी साधु था। एक लंगोटी में घूमता रहता था। जब उनकी दया हुई उस वक्त पता लगा कि संतमत तो निराली ही चीज है। संतमत को समझना ही सब से बड़ी बात है। समझ आ जाती है तो कोई परेशानी नहीं रहती। संतमत समझा भी तभी जाता है जब हमें कोई काबिल महात्मा मिल जाता है। यूं तो कितने ही महात्मा मिल जाते हैं। जैसे भी विचारो का मिलेगा वैसे ही हमारे भी विचार बन जाएंगे। अगर पूर्ण और सच्चा है तो उसके विचार जरूर भी हमारे अंदर आ जाएंगे। जब मैंने नाम लिया तब पता लगा कि नाम भी कोई चीज है। संतमत भी कोई चीज है। जो अपने दुख की बातें बता रहा हूं। नाम लेने से भी पहले की है।

एक बार गांव में ''डंडा पुलिस'' गई थी। मैं उस वक्त 13–14 वर्ष का हूंगा। अगर किसी के पास हथियार होते तो उन को पकड़ने के लिए ही वह पुलिस थी। शाम को सारे गांव को इकट्ठा कर लिया। मैं अपनी बातें ही आप लोगों को बताता हूं। मैंने उस दुख में परमात्मा को इतना याद किया ऐसा तो कभी किया ही नहीं। जो दुख में याद करता है तो मालिक उसकी मदद भी करता है। सुख में अगर हम याद करेंगे तो कहना ही क्या है? वह आप

ही खुश हो जाता है। दुख में तो याद करते हैं पर थोड़ा सा सुख आते ही हम भूल जाते हैं। किस तरह? जैसे अब मैं परमात्मा को इतना याद नहीं करता। क्योंकि कोई तो पंखा लगाने वाला है और कोई खाट बिछाने वाला है। कोई पांव दबाने की कोशिश करता है। कोई पानी पकड़ाता है, कोई रोटी देता है। जब आदमी पानी ही अपने हाथ से लेकर नहीं पी सकता पानी लेकर तो फिर आदमी क्या भक्ति करेगा? सोचो! मैं क्या कहता हूं? मैं इन चीजों से बंधा भी नहीं हूं। ये मालिक की दया है। मैं खुद भी कहता हूं कि अपना काम आप करना चाहिए।

पर जो मैं विशेष बात कह रहा हूं। उस वक्त पर मेरा क्या काम था? वह डंडा पुलिस शाम को आई और रात को उन्होंने भाषण दिया। वहां बड़ी भारी दुनिया इकट्ठी हो रही थी। मेरा बाप भी चला गया। मेरे बाप ने मेरा एक ताऊ कप्तान था, उसका पिस्तौल उठा लिया। पुलिस का थानेदार जो आया था उसने कहा कि जो कप्तान का पिस्तौल उठाया गया है उसे बरामद किया जाएगा। वह आदमी भी यहीं बैठा है। बातचीत हुई तो रात को मेरा बाप कुछ नहीं बोला। मेरे बाप को रतौंधी का रोग था। उसको दिखता नहीं था। उसको पकड़ पकड़ने के लिए आए थे। मैं बाहर सोया करता था और वह अन्दर। वह रात को बिना ही बातें किए सो गया और पता नहीं कब छत के ऊपर से होकर दूसरी तरफ उतर गया। एक मैदान पड़ा था वहां से उतर कर खेतों में से होता हुआ बीरन गांव के बाहर—बाहर होता हुआ, बलियाली से बवानी खेड़ा जाकर रेलगाड़ी में जा बैठा। जब सुबह उठा और मैं अंदर गया तो खाट पड़ी थी पर वो नहीं था। लोग मेरे से कहने लगे कि क्या तुझे पता है? मैंने कहा—मुझे तो पता नहीं है। अगर पता होता तो बता देता। पुलिस ने हमारे साथ बहुत ही अच्छा किया है। उन्होंने कहा—यह करो, वह करो। डंडे की मार बहुत बुरी होती है। मुझे

भी कमर में डंडा मारा। मैं भी सीधा हो गया। उन्होंने कहा—बताओ? मैंने कहा—पता नहीं है। मैं क्या बताऊं और क्या नहीं? मैंने जो बात कहनी थी वह तो अभी बाकी है। मेरी पेशी पड़ गई।

ऐ सत्संगियो ! 10–15 आदमी थे। सभी ऊंटों पर चढ़े हुए थे। मैं पैदल था। मेरे को ऊंट पर नहीं चढ़ाया। जिसकी हिम्मत होती है वही ऊंट पर बैठता है। कोई तो अपना ऊंट लिए हुए था और कोई किसी दूसरे का लिए हुए था। मुझे तो कसी ने भी ऊंट पर बैठने के लिए नहीं कहा। पर मैंने ऊंट की पूंछ पकड़ ली। जितना उस दिन मैंने परमात्मा का नाम लिया और उसको याद किया उतना अगर आज तक याद करता तो धरती आसमान को एक कर देता। परमात्मा तो मेरे आगे—आगे फिरता। उस दिन मुझे बड़ा भारी दुख था। उस दुख में उस परमात्मा को बहुत आघात याद किया। वहीं से ऊंट की पूंछ को पकड़ लिया। सिवानी तक मैं ''राम—राम'' करता गया। सिवानी में बोले कि यहां नहीं, हिसार जाना है। मैं पैदल ही हिसार चल दिया। हिसार गए और थानेदार मिला। यह बात जरूर ही कहनी पड़ेगी कि जिसके पास हम गए, उसने मेरी तरफ देख कर कहा—तेरा क्या लगता था? मैंने कहा—मेरा बाप है। उसने कहा—अच्छा ! तो फिर बाप तो पता नही कैसे—कैसे हो जाते हैं। बाप तो अच्छे भी होते हैं और बुरे भी होते हैं। मैंने कहा—मुझे तो पता नहीं जैसा था, वैसा था, वह मेरा बाप। जिसने मुझे मारा था, वह थानेदार मुसलमान था। उसने उनसे पूछा—इसको क्यों लाए? उसने कहा—ये उसका लड़का है और यही तो उसका जिम्मेवार है। उसने कहा—नहीं, ये नहीं है। क्या तुझे शर्म नहीं आई? जाओ तुम सारे के सारे। अगर वह पकड़ा जाता है तो उसे हाजिर कर देना। इसको कोई कुछ नहीं कहेगा। अब सारे ही मुंह की ओर देखते रह गए। जो और गए थे वे भी। वह बड़े प्यार से बोला। मेरे से उसने कहा—आप क्या करते

हो? मैंने कहा—मैं तो कुछ भी नहीं करता। गरीब आदमी हूं। मैं हर तरह की मजदूरी करके गुजारा करता हूं। उसने कहा—ठीक है। तुझे कोई भी नहीं बुलाएगा, आज के बाद। मैंने कहा—अच्छा जी। वहां से सब छोड़ दिए। मेरे कहने का मतलब यही था कि हम छुट गए और किसी ने कुछ कहा भी नहीं। पर मुझे तो यह विश्वास हो गया कि मैं राम के नाम लेता हुआ गया था। राम ने ही मेरे बंधन काट दिए। मेरे अपने विश्वास की बात बताता हूं। मैंने राम को बड़ा भारी याद किया था। मैं अपने दुख की बातें आप लोगों को बताता हूं। जब तुम्हारे पर कोई आफत आती है तो तुमने राम को तो देखा तक नहीं है। मैंने भी तो राम को नहीं देखा था। पर मेरा यह विश्वास था कि राम सब कुछ कर सकता है। उसी विश्वास ने मेरा सब कुछ किया। हमने राम को नहीं देखा, भगवान को नहीं देखा। देवी देवता कुछ भी नहीं देखे। हम बिना देखे ही उनको ईष्ट बना लेते हैं पर जिसको हम देखते हैं उस पर हम कभी भी विश्वास नहीं करते। हम पूर्ण सतगुरू को देखते हैं। गुरू को तो सारी दुनिया ही लिए बैठी है। पूर्ण सतगुरू को देखते हैं। गुरू को तो सारी दुनिया ही लिए बैठी है। पूर्ण सतगुरू तो उसी को कहते हैं जिसने अपना जीवन अच्छा बिताया हो। पूर्ण परमात्मा के जिसके लक्षण हैं उसको ही पूर्ण कहा जाता है। मैं अपनी बातें आपको क्या बताऊं? मास्टर ने एक शब्दों की किताब छपवाई है। उसमें बाईस—तेईस गुण लिखे हैं। मैं अपनी आत्मा से यह बता कहता हूं। जब वह पुस्तक छपकर आई और उसकी बातें पढ़ी, उसमें 22–23 गुण सतगुरू के लिखे हैं। उसमें इसने लिखा है कि मैंने पास में रहकर देखे हैं। मैंने कहा—मास्टर ! किसने तुझे बताए? इसने कहा—मैंने ये आपके पास रहकर देख लिए हैं। मैंने आश्चर्य से पूछा—क्या ये गुण मेरे अंदर हैं? इसने कहा—हां! मैंने कहा—मुझे तो दिखाई नहीं देते। इसने कहा—आपमें ये हैं। एक दिन कोई बात थी। मैं अपनी बातें बताता हूं। मुझे पता नहीं कि मैं

कितना बड़ा आदमी हूं। मैं कहता हूं—मैं छोटा सा आदमी हूं और वास्तव में छोटा हूं। जब तक मेरी आंखे मुझे छोटा देखती हैं मैं तिर जाऊंगा। जिस दिन मैं यह देखने लग जाऊंगा कि दुनिया में मैं बहुत बड़ा हो गया हूं उस दिन मेरा साथ छोड़ देना फिर मैं तो डूबा डुबोया ही बैठा हूं। जब सतगुरू ही डूब गया तो बाकी भी क्या रह गया? ऐसी मेरे सतगुरू की ही बातें थीं। मेरे सतगुरू शहनशाहों के शहनशाह थे। सतगुरू तो किसी भागी को मिलते हैं। मेरा सतगुरू तो कुल मालिक ही था। मेरे सतगुरू जैसा सतगुरू सारी दुनिया को मिले। इतने भारी कि मैं आप लोगों को क्या बताऊं। मनु जी महाराज ने लिखा है—

गुरू की निंदा सुनिये न काना।
पाप लगे गौ घात समाना।।

सतगुरू की निंदा करने का गौ हत्या जितना पाप लगता है। क्यों लगता है? क्योंकि गुरू की निंदा सुनने से उसके मन में विक्षेप आ जाता है। विक्षेप आने से गुरू में अविश्वास हो जाएगा। अविश्वास होने से उसमें नुक्स ढूंढने शुरू कर देगा। जैसे पतिव्रता स्त्री अपने पति की बुराई सुनती है तो वह गिर जाएगी। गुरूमुख भी यदि अपने गुरू की निंदा सुनता है तो गिर जाएगा। क्योंकि उसका गुरू में अभाव आ जाएगा कि मेरे गुरू में यह दोष है। सतगुरू में कोई भी दोष नहीं होता। उसमें गिरावट आ जाती है। मनु जी ने यह ठीक ही कहा है—

गुरू की निंदा सुनिये न काना।
पाप लगे गौ घात समाना।।

मेरा एक दिन ऐसा ही टाइम आ गया। मैं अपने गांव के एक सेठ, जो बहुत बड़े मुखिया थे, उनके पास जाया करता था। मैं अपनी ही बातें आपको बता रहा हूं। मेरा और उन लाला जी का बड़ा प्यार था। ऐसा हुआ कि मेरा बाप और मेरी दादी मेरा घर

बसाने के लिए एक औरत ले आए। मेरे काके—ताऊ सब इकट्ठे हो गए। बात चीत की। उन्होंने मुझसे कहा—हमने यह काम किया है और अब हमारा घर भर जाएगा।

ऐ सत्संगियो ! तुम क्या सोचते हो? यह सूली पर कला करना है। कभी तुम कुछ और बात समझते हो। यह संतमत है। इसको मत पकड़ना। तुम आरती पूजा में ही लगे रहना। ब्रह्मा की, विष्णु की, देवी—देवताओं की। संसार की चीजें इनसे बहुत मिल जाएंगी। पर संतमत में मत फंस जाना। संतमत तो एक सूली पर कला करने के समान है। तलवार की धार पर चलना है। पर यह बात मैं जरूर कहूंगा कि जिसे अपने रास्ते का फिक्र है उसे संतमत में आना चाहिए। जिसने दुनिया खानी है वह संतमत में मत आना। दुनिया से बचना है वह संतमत में आ जाओ। मोक्ष के लिए तो एक ही मार्ग है—संतमत। मुक्ति न तीर्थ में होगी, न व्रत में होगी, न पूजा पाठ में होगी और न यज्ञ हवन में होगी। न दान पुण्य में होगी। किसी भी चीज से नहीं होगी। औरों में स्वर्ग—वैंकुठ मिल जाएंगे पर मैंने तो मुक्ति की बातें कही हैं। ब्रह्मलोक, इन्द्रलोक मिल जाएंगे। विष्णु लोक, देवी—देवताओं के लोक मिल जाएंगे। मेरी बात मुक्ति की है। संतमत में तो उसे ही आना चाहिए, जिसने संसार के झगड़ों में फिर नहीं पड़ना है। संत इसी जीवन में बता देते हैं कि इसी जिन्दगी में उद्धार हो जाता है। मेरी जो बातें रह गई हैं वे याद दिला देना। अब बात और ही आ गई। आप कहोगे—क्या तसल्ली हो जाएगी हमें। हां, तसल्ली आपको जरूर ही हो जाएगी। मैं एक बात बताता हूं। तुम तप करते हो। क्या तपेश्वरी के दिल में कभी शांति आती है? तपेश्वरियों ने क्या—क्या खेल देखा? तप करने से शांति नहीं आती है। आती है तो बताओ? क्या विश्वामित्र को शांति आई? क्या श्रंगी ऋषि को शांति आई? दूसरी बात यह भी है कि जप करने से शांति नहीं

आती। कितनी शांति आती है? मैंने कई ब्राह्मण ऐसे देखे हैं जो अपने कमरे में बैठे रहते हैं। कोई आता है, कहता कि जप करने हैं जी। वे कहते हैं—मैंने कर करा कर रख रखे हैं उन्हें ले जा। ऐसी बातें होती हैं या नहीं? मेरी बात गलत नहीं है। मुझे पता है और मैं बता भी दूंगा और नाम भी ले दूंगा और अगर वह हां भर ले तो क्या करोगे? वे कहते हैं—मेरे पास करे कराए, जप हैं वे ले लो। अगर वह जाप करता तो उसको खुद को शांति मिलती। उसे शांति नहीं हैं। जप और तप में शांति नहीं है। तुम पूजा भी रोज ही करते हो। कभी देवी, कभी देवताओं की। मेरी भी बहुत ज्यादा पूजा की हुई है। पूजा तुम भी करते रहते हो। इससे भी शांति नहीं मिलती। पूजा और पाठ भी करते रहते हो। कोई गीता का पाठ करता है, कोई रामायण का करता है। कोई भागवत का करता है। अगर पूजा—पाठ और अगर दान पुण्य की कहते हो तो राजा बलि यज्ञ करने वाला था उसको पाताल में भेज दिया था। दान पुण्य करने वाला कर्ण से बड़ा कोई भी नहीं हुआ। ये तुम्हारे ही इतिहास कहते हैं। कहते हैं कि उसको सोने के पहाड़ के पहाड़ मिले। उसको यही कहा गया कि इन्हीं को खा लो। उसने कहा—अब मैं क्या करूं? मैंने यह कथा महात्माओं से सुनी है। राजा कर्ण घबरा गया। उसने पूछा कि अब क्या करूं? उन्होंने कहा—आप देख लो। आपने सोने का ही दान किया है। इसको ही खाओ, पीओ। यह बात मैं भी कहूंगा कि जैसा दोगे वैसा ही मिलेगा। जैसा करोगे, वैसा ही भरोगे। खोदोगे तो पड़ोगे। मैंने कथा तो नहीं सुनी। ये महात्माओं से सुनी हुई बाते हैं। कर्ण ने काल महाराज से विनती की। उसने कहा—महाराज मुझे एक बार मत्यु लोक में भेज दे। चाहे कुछ भी हो। काल महाराज ने कहा—एक शर्त है कि सिर्फ इतनी ही देर भेजूंगा जितनी देर तक चौंका नहीं सूखता है। महात्मा तो महात्मा ही होते हैं।

पलटू लिखा नशीब का संत देत है फेर।
जो दिल सांच हो आपने तो पलक न लागे देर।।

पलटू जी कहते हैं कि संत लिखा हुआ मेट देते हैं। सो—

सतगुरू शरणै जाइए म्हारी हेली ! कोटि कर्म कट जा।

सो इनमें शांति की बात तो कहीं भी नहीं आई। कर्ण को भी शांति नहीं मिली। बहुत ही दान पुण्य किया था। चाचा साधु राम! मैंने अपनी बात आपको निष्पक्ष समझ कर ही कही है। आप ऐसा ख्याल न करना कि महाराज जी मेरे गुरू हैं। नहीं, सच्ची बात तो गुरू से भी पूछ लेनी चाहिए। नहीं तसल्ली हो तो उसकी तसल्ली करनी चाहिए। जब तक संशय नहीं जाएगा तो संसार नहीं छूटेगा। अगर संशय ही रह गया तो संसार में बार—बार आना पड़ेगा। मैं वह पाखंडी आदमी नहीं हूं कि तुम्हारी इज्जत भी लूं और धन भी लूं और तुम्हें अपना दास बनाए रखूं। दास बनोगे तब पता भी लग जाएगा। सो संशय रह गया तो संसार नहीं छूटेगा। भ्रम है तो भ्रांति कैसे जाएगी? भ्रांति है तो शांति नहीं आएगी। ये बातें मैंने सिद्ध करके बताई है। अब कर्ण को इतनी ही देर का समय दिया गया जितनी देर में चौका सूखता है। चौका तो हवा थोड़ी ही देर में सुखा देती है। उसने सोचा—अब क्या करूं?

काक भुषण्डी जी उसके गुरू थे। वह उनके पास चला गया। मैं सुनी हुई बातें बताता हूं। उसने उसको सारी घटना बता दी। कर्ण ने बता दिया कि मुझे केवल इतनी ही देर के लिए भेजते हैं जितनी देर तक चौका सूखता है। उसने कहा—कर्ण! कोई बात नहीं। तू घबरा मत। मैं ऐसी विधि बता दूंगा कि चौका सूखेगा ही नहीं। उसने कहा—बताओ। काक भुषण्डी ने कहा—सरसों के तेल का चौका लगा देना। गारा में तेल मिला लेना। गारा सूखेगी नहीं। गुरू ने उसको रास्ता बता दिया। इसी तरह जाकर उसने चौका लगा दिया। भगवान ने भी सोचा कि इसने तो जुल्म ही कर दिया।

बताने वाला भी कमाल ही कर गया पर हम भी रास्ता निकालेंगे। हवा के झोंके चला दिए। कनागतों के झौंकों को तो आप भी मानते हो। काल महाराज ने चौका सुखाने के लिए ही ये चलाए थे। फिर भी 15–16 दिन तक वे सुखा नहीं सके। इतने समय में खूब दान पुण्य किया। खूब सामान लुटाया। कर्ण वापिस चला गया और उसके लिए सभी कुछ मिल गया। इसीलिए काक भुषंन्डी जी की लोग पूजा करते हैं। लोग कनागतों में पहले कौवों को रोटी देते हैं। द्रोपदी ने अपनी साड़ी को फाड़कर दिया था उसका साड़ियों का पहाड़ बन गया। सो इसी तरह दान पुण्य की बाते हैं। राजा नग एक करोड़ गौ रोज दान किया करता था। वह गिरगिट बना। क्यों बना? अपने अहंकार के कारण। सो सतगुरू की शरण में जाने वाला अहंकार नहीं करेगा। अगर पूर्ण महात्मा मिल जाता है तो अहंकार छुट जाता है। अहंकार की बात आती है। महाराज जी ऐसी मिसालें बहुत दिया करते थे।

एक बार की बात है कि कालू कीरा नामक नायक एक झींवर था। वह महात्मा था। कहीं लकड़ी काटने गया था। वह नारद का भी गुरू था। एक वजीर का भी गुरू बना था। वह दरख्तों पर ताड़ काट रहा था। उसका ऊपर से दरांत पड़ गया। उसने कहा—भाई! दरांत मुझे उतरना पड़ेगा। तू गुरू के प्रताप से ऊपर आ जा। अब वह दरांत उठ कर ऊपर चला गया। कई—कई आदमी मंत्रों से भी चीजों को उठा देते हैं। राजा का वजीर यह सब देख रहा था। उसने सोचा कि यह तो कोई करणी वाला महात्मा है। उसने सारी लकड़ियों को ढ़ंग से जंचाकर भरोटा (बोझ) बांध दिया। जब वह नीचे उतरने लगा तो वजीर ने कहा—लाओ, महाराज मैं उतारता हूं। उसने उनके पांव को हाथ लगाया और उसको नीचे उतार लिया। उसने उससे पूछा—भाई! तू कौन है? उसने बता दिया मैं वजीर हूं। कालू कीरा ने पूछा—तू कहां से आया था? उसने

कहा—मैं तो घूमने—फिरने के लिए आया था। आप दिखाई दे गए। मेरे दिल में एक विचार आया है, आप मुझे नाम दे दो। अब कालू कीरा ने सोचा कि यदि नाम नहीं दूं तो यह वजीर है। अगर दे देता हूं तो ये नाम की क्या कद्र करेगा। पर सोचा कि देखा जाएगा। सो उसने उसे बैठा कर नाम दे दिया। वह भजन करने लग गया। ध्यान में बैठता था। सब ठीक था। कालू कीरा ने कहा—अच्छा भाई मैं तो जाता हूं। वजीर ने कहा—महाराज! मैं भी चलूंगा। वजीर ने वह लकड़ियों का गट्ठा अपने सिर पर रख लिया।

जब गांव आया तो उस झींवर ने कहा—भाई! अब यह मुझे दे दे। मेरा तो घर भी बाहर ही है। तूने कचहरी में दूसरे रास्ते जाना है। लेकिन वह उसके साथ ही उसके घर चला गया और घर में लकड़ियों का गट्ठड़ डाल कर चला गया। कालू कीरा उदास होकर खाट पर पड़ गया। किसी का धन निकल जाए तो उसके साथ ऐसा ही होता है। पर संतों के पास पूरी पूंजी होती है। संत दयाल होते हैं। उनकी पूंजी को कौन छिन सकता है। वे उस रास्ते पर अपनी पूंजी ले जाते हैं कि वह बरबाद नहीं होती। पर वह उदास होकर चारपाई पर पड़ गया। उसकी घर वाली ने पूछा कि आप उदास क्यों हो? उसने कहा—मैं आज लुट गया और डाका पड़ गया। उसने पूछा—डाका कैसे और क्यों पड़ा? उसने बता दिया कि इस तरह जंगल में वजीर मिल गया और उसको नाम दे दिया। उसने कहा—फिर इतने उदास क्यों हुए? कालू कीरा ने कहा—उसको नाम का क्या पता? उसकी पत्नी ने कहा—पहले ही तो उदास नहीं होना चाहिए। मैं आपको कल बता दूंगी कि आपका धन ठिकाने पर पहुंच गया या आपकी पूंजी लुट गई है। उसने यत्न पूछा। उसकी पत्नी ने कहा—आप भोजन कर लो। कल बता दूंगी।

अगले दिन सुबह ही उसने अपने पति से कहा—आप नहा धो

लो। वह नहां लिया। उसने पुराने कपड़े पहनने के लिए कहा। उसने कपड़े पहन लिये। उसकी पत्नी ने कहा—यह मिट्टी की हांडी उठाओ। उसने पूछा—क्या करूं? उसकी पत्नी ने कहा—कचहरी के आगे से निकलना जहां से उस वजीर को आप दिखाई दो और अगर वह आप से पूछे तो बता देना कि मैं दो चार घरों से भिक्षा मांग कर लाया करता हूं। सिर्फ दो घरों में जाना, ज्यादा नहीं। उस उसका पता लग जाएगा। जैसी भी बातें हों मुझे आकर बता देना। कालू कीरा ने कहा—ठीक है। वह कचहरी के सामने से निकला तो वजीर ने उसको पहचान लिया। वह दौड़ कर आया उसने बादशाह का हुकम भी नहीं माना। उसने पहले तो मत्था टेका। फिर पूछा—महाराज जी! आप कहां जाते हो? उसने कहा—मैं तो दो—तीन घरों से भिक्षा लाता हूँ। वजीर ने कहा—ये हांडी मुझे दे दो। उसने कहा—तू वजीर है। तू अपना काम छोड़ कर क्यों आ गया है? वजीर ने कहा—मैं आपके आगे तो वजीर नहीं हूं। आपका तो मैं सेवक हूं। यह मुझे दे दो। वजीर ने उनसे वह हांडी छीन ली और कह दिया कि मैं इन घरों से भिक्षा मांग कर ला दूंगा। दो चार घरों से उसने भिक्षा मांगकर ला दी। वह हांडी लेकर चला गया। उसकी पत्नी ने पूछा—क्या बात रही उसने सारी बातें बता दी। उसकी पत्नी ने कहा—तुम्हारा बीज ठिकाने पर चला गया है। अब आप मजे करो। आप तिर गए। अब धोखा न मानना। आपको ऐसा शिष्य मिल गया है कि दुनिया में आपकी पूजा हो जाएगी। दुनिया में आपका नाम रोशन कर देगा। जब उसने राजा का ही हुक्म नहीं माना और कोई लोक लाज की परवाह भी नहीं की, तो इससे बड़ी बात और क्या होगी।

मान बड़ाई गर्व इर्ष्या सुगरा हो सो तयागे।
बिन त्यागे हर ना मिलै पाप काया कै दूना लागे।।

जब तक हम मान बड़ाई में हैं, सतगुरू की भक्ति कर ही नहीं

सकते—

मोटे बंधन जगत के गुरू भक्ति से काट।
झीने बंधन चित्त के कटैं नाम प्रताप।।
मोटे जब तक जाएं नहीं, झीने कैसे जाय।
ता ते सब को चाहिए, नित गुरू भक्ति कमायं।।

गुरू भक्ति भी कैसे हो?

एक जन्म गुरू भक्ति कर, जन्म दूसरे नाम।
तीसरे में मुक्ति पद, चौथे में निज धाम।।

जब वजीर वापिस कचहरी में गया तो राजा ने पूछा—तू किसके हुक्म से भिखारी के पास गया था? वजीर ने कहा—वे मेरे सतगुरू थे सो मैंने किसी का हुक्म नहीं लिया। तब राजा ने कहा—जाओ, अब तो तुम्हारे सतगुरू ने ही तुम्हे तारना है। मेरी नौकरी को छोड़ दे। यहां तुम्हारी कोई जरूरत नहीं है। उसको नौकरी से हटा दिया। वजीर ने सोचा—अब तेरे भाग जाग गए हैं। यहां तो बंधन थे। अब आजादी से भजन करूंगा। वह वहां से निकल कर एक दरिया के किनारे बैठ गया। मस्त बैठा था और वहां भजन करता था। उसको एक मास बीत गया। वह भक्ति में लीन हो गया। गुरू को भी पता लग गया कि तेरे शिष्य के साथ यह घटना घटित हुई हैं।

थोड़े दिन बाद किसी ने उस राजा के पड़ौसी राजा को बता दिया कि महाराज ! जो वहां वजीर था उसको राजा ने हटा दिया है और एक धोबी को वजीर बना लिया है। पड़ौसी राजा ने सब पता ले लिया कि वह वजीर नहीं रहा और धोबी को वजीर बना लिया। उसने उसके ऊपर आक्रमण कर दिया। उसके राज्य को चारों तरफ से घेर लिया। राजा उस धोबी वजीर से कहा—तू कैसे बैठा है? राजा को तो चारों तरफ से घेर लिया है। धोबी ने पूछा—अब क्या होगा? लोगों ने कहा—लड़ाई करनी पड़ेगी। आप

ढंग बताओ। धोबी ने कहा—ढंग तो बता ही रखा है। वजीर बनने से पहले 10 घरों के कपड़े धोता था अब मैं 20 घरों के कपड़े धो दूंगा। आप सब का भी काम ठीक कर दूंगा। आप यहां से भाग चलो। उन्होंने कहा—तूने तो काम ही खराब कर दिया। नाश कर दिया। इसीलिए कहते हैं कि मर्द तो मर्द ही होता है। खून का बड़ा असर होता है। राजा ने उससे कहा—तू जा, तूने तो नाश ही कर दिया। राजा ने सोचा—अब क्या करूं? किसी भी तरह अपने पुराने वजीर को मिलूं, तो बात बनेगी। राजा भेष बदल कर अपने पुराने वजीर के पास, जहां वह बैठा था, पहुंच गया। उसने उसके पांव पकड़ लिए। वजीर ने कहा—महाराज! आप क्या करते हो? आप तो मेरे बादशाह हो। राजा ने कहा—आज बादशाह नहीं हूं। आज मैं भिखारी बनकर आया हूं। वजीर ने बात पूछी। राजा ने बता दिया कि राज्य को चारों तरफ से घेर लिया है। आप दया करो। वजीर ने कहा—यह मेरे वश की बात नहीं है। मेरे हाथ से डोर छुट गई है। जिसको आपने भिखारी कहा था, वह भिखारी इस काम को कर सकता है। राजा ने जाकर कालूकीरा के पांव पकड़ लिये। उसने पूछा—क्या बात है? राजा ने सारी बातें बता दीं कि राज का काम ही बिगड़ने वाला है। दूसरे राजा ने राज्य को घेर लिया है। उसने कहा—चलो मैं चलता हूं। तब उसने खुद जाकर उससे कहा—भाई ! खड़ा हो, राजा दुखी होगा, तो रैयत भी दुखी हो जाएगी। संत महात्माओं को तो पहले राज की ही रखवाली करनी पड़ती है। **जैसा राजा, वैसी प्रजा।** अगर राज्य में ही कोई क्रान्ति आ गई तो हम कहां रहेंगे? राज्य में शांति रहेगी तो हम भी बसते रह जाएंगे। जाओ और मदद करो। सब से बड़ी भक्ति यही है।

संतमत सबसे बड़ी भक्ति अपनी संगत को सच्ची बातें बताने को मानता है। सच्चाई बताना ही सबसे बड़ी भक्ति मानी गई है।

इसीलिए मैं आप लोगों को धोखे की बातें नहीं कह सकता हूं। ऐसा न हो कि मेरे ऊपर कोई भार चढ़ जाए और आप भी गिर जाओ। मैं सीधी बातें जो मेरे समझ में आती हैं वही बताया करता हूं।

वजीर ने वहां जाते ही सारे प्रोग्राम को बदल दिया और हुक्म दिया कि इस तरह से करो। वे तो राज्य को घेरे बैठे थे पर वजीर ने जाकर उसकी सेना को बाहर से घेर लिया। दूसरे राजा ने कहा—मैं तो यही समझा था कि वजीर बदल चुका है। उस वजीर के बिना इतना काम नहीं बन सकता। अब हम सभी मारे गए हैं क्योंकि भागने के लिए कोई जगह नहीं है। घेरा चारों ओर का है। वह दूसरे के राज्य को लेने के लिए आया था पर अपना ही राज्य दे बैठा। अब अगर इस कहानी को अंतर में घटवाओ तो इसे अंतर में घटा दूंगा। हमें घेरता कौन है? जब सतगुरू दया मेहर करता है तब वह नाम हमारा सब कुछ करने वाला वजीर होता है। वह वजीर ही हमें अनामी से मिलाता है। जो नाम हम जुबान से जपते हैं, वह वर्णात्मक नाम है वह हमें धुनात्मक से मिला देगा। जब धुनात्मक से मिल जाओगे तो तुम्हारे सभी शत्रु—काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार जो घेरा दिए बैठे हैं ये खुद ही घेरे में आ जाएंगे। और खुद ही चक्कर में आने से सारे के सारे ही ढ़ीले पड़ जाएंगे और अपना मान तोड़ कर चरणों में पड़ जाएंगे। किसके चरणों में? ये उस धुनात्मक नाम के चरणों में पड़ जाएंगे। ये धुनात्मक नाम ही राधास्वामी ही है। तुलसी साहब की बातें पढ़ रहे थे। उनकी खुल्लम खुल्ला यह बात आई थी—

पांचों नाम जीव जब भाखा। छटवां नाम गुप्त करि राखा।।

आखिर में जाकर तुलसी साहब ने इसका वर्णन, साहेब—स्वामी कर दिया। साहेब स्वामी प्रगट भासा। वह नाम कौन सा है? उसको वह जीव बताएगा जो उसका सहारा लेकर चलेगा। पर मैं यह बात नहीं कहता। मैं तो यह कहता हूं कि ये पांच धुनियां हैं। इन

धुनियों को जब तक नहीं समझोगे तब तक ठीक नहीं बैठ सकेगी। ये लोग बिना निशान के तीर मारते हैं। वह तीर लगेगा नहीं। तीर भी गया और वार भी गया। दोनों ही चीजें बरबाद हो जाती हैं। सो तीर निशाने पर लग गया तो ठीक हो जाता है। यह निशाना छठे चक्कर का है। निशाने पर तीर मारने का मतलब है कि हमने अपने नाम की चोट यहां छठे चक्कर पर लगानी है जो बाद में स्वतः ही लगने लग जाती है। यही निशाने का तीर है। सो आप सवेरे शाम घंटा दो घंटा अपने मालिक की बंदगी करो और इस छठे चक्कर पर जरब लगाया करो। इस जगह पर जब जरब लगनी शुरू हो जाएगी तो शांति भी आ जाएगी। और किसी तरह शांति नहीं है। संतमत में यही एक बात बताई जाती है। संतमत केवल उन्हीं लोगों के लिये है जो रोज—रोज का रोना पीटना नहीं करना चाहते। रोज—रोज का रोना पीटना ही करना है तो संतमत में मत आओ। फिर तो तुम्हें स्वर्ग और वैकुंठों में ही जाना चाहिए। ब्रह्म लोक, पित्तर लोक, इन्द्रलोक में भोग भोग कर फिर यहां आ जाओगे। पर जिन पर संत सतगुरू दया करते हैं वे वापिस यहां नहीं आते। तीन जन्मों तक उन्हें जरूर उस घर पहुंचाना होता है। मेरी गीता सुनी हुई है। कष्ण जी ने भी ऐसी ही बात कही है। अर्जुन ने कष्ण जी से कहा—महाराज! बादलों की घटा चढ़ आई है और इस हवा से ये बादल फट भी गए हैं। इसी तरह अगर योगी, योग अभ्यास करता—करता चोला छोड़ता है तो क्या उसकी योग क्रिया भ्रष्ट हो जाएगी? कष्ण जी ने कहा—नहीं। जैसे हवा ने इन बादलों को तितर—बितर कर दिया है इसी तरह जब अभ्यासी चोला छोड़ जाता है, मैं सारी बातें नहीं बताता हूं। मैं तो केवल सार ही बताता हूं। तब उसके चोला छोड़ने पर मैं उसको

स्वर्ग और वैकुंठ सजा के तौर पर देता हूं। यह तुम्हारी गीता का वचन मेरा सुना हुआ है। स्वर्ग और वैंकुठ सजा में मिलते हैं। फिर जब उसको दूसरा जन्म मिलता है तो उसको बड़े खानदानी घर में जन्म दे दूंगा। वह बड़ा विद्वान भी बनेगा। जिस जगह उसने अपनी क्रिया को छोड़ा था वहीं से फिर लग जाएगा। संतमत में सीधी बातें आ जाती हैं। कईयों की नाम लेते ही सुरत रास्ता पकड़ जाती है और बहुत जल्द अभ्यास कर जाते हैं। इससे यह समझ लो कि उनका पिछले जन्म का किया हुआ काम था। कई—कई ऐसे जीव होते हैं। अभी आकर वे नाम तो लेते हैं, उनको लग्न इतनी नहीं होती है। बीज तो डाल दिया गया है। वे अगले जन्म में अभ्यास करेंगे और फिर उससे अगले जन्म में भी करेंगे। इसकी और मिशाल देकर बताता हूं। एक आदमी के पास 99 रुपए हैं और दूसरे के पास केवल एक रुपया है। अब एक रुपये वाले को तो 99 रुपए इकट्ठे करने पड़ेंगे। तब उसके पास 100 रुपए बनेंगे और पहले आदमी को जिसके पास 99 रुपए पहले ही तैयार हैं उसको तो केवल एक रुपया ही मिलाना पड़ेगा। सो किसी की भी नकल मत करो। कइयों का नाम लेते ही बड़ा अभ्यास बन जाता है क्योंकि उनके पास पहले की पूंजी होती है और केवल एक ही रुपया मिलाना होता है। सो उनका तो भजन जल्दी ही बन जाता है। जिसके पास पहले की कोई पूंजी नहीं है। पूंजी जोड़नी अभी शुरू की है तो उन्हें ज्यादा काम करना पड़ता है। पर एक बात है जिस वक्त मैंने महाराज जी से नाम लिया था। उस वक्त एक भाई ने मुझसे कहा—तू अगले जन्म में बहुत बड़ा गुरू बनेगा और तुम्हारा काम भी अगले ही जन्म में पूरा होगा। मैंने उससे आश्चर्य से पूछा—क्या अगले जन्म में काम पूरा होगा?

उसने कहा—हां ! अगले जन्म में काम पूरा होगा। उस वक्त मुझे सालिगराम की बात याद आ गई। सालिगराम से किसी ने यह कह दिया कि सालिगराम ! तेरा काम बारह वर्ष में बनेगा। सालिगराम ने तैश में आकर कहा—उसकी ऐसी की तैसी। मैं बारह महीने में बनाकर दिखाऊंगा। बारह वर्ष में तो पता नहीं कि क्या बनेगा या क्या नहीं। बारह महीनों में करके दिखा दूंगा। मैंने कहा—हम भी उसी के पोते पड़ पोते हैं। अगर काम बनना ही है तो अगला जन्म भी अभी बदल लेंगे। मैं उस बात को अपनी जुबान से कहना नहीं चाहता।

ऐ सत्संगियो ! इंसान क्या नहीं कर सकता है?

तू बांध कमर क्यों डरता है।
फिर देख खुदा क्या करता है।।

चौकस होकर लग जाओ। इस जीवन में तो तुम आसमान को भी तोड़ सकते हो। इसी जीवन में ही मोक्ष का मुंह देख सकते हो पर मैंने मोक्ष के विषय में बता दिया है कि संतमत में ही शांति आ सकती है और कहीं नहीं। कहीं भी, किसी भी जगह और किसी भी चीज में शांति नहीं आ सकती है। क्योंकि काल माया के देश में कहीं और जगह शांति है ही नहीं। शांति केवल संतमत में ही है। संतमत में भी कौन सी शांति है? अगर इसमें भी शब्द की डोर नहीं पकड़ते हो तो यहां भी शान्ति नहीं है। शब्द की डोरी को पकड़ लोगे तो शांति मिल जाएगी। जैसे कुंवारी लड़की शादी के बाद अपने पति के घर चली गई। उसका पति इच्छा को पूरा करने वाला है तो वह कहीं भटक नहीं सकती है। उसमें कोई भी ऐब नहीं है तो वह अपने पति के हवाले हो गई है। इसी तरह अगर हमें पूरा सतगुरू मिल गया है और उसने नौ शब्दों को चीरते हुए दसवें शब्द का भेद बता दिया है और हमने उस शब्द की धुनि भी पकड़ ली है तो हमें अशांति क्यों रहेगी? हम उस शब्द धार से निकल

कर आए थे और वापस उसी धार में समा जाएंगे। क्या किसी को अपने घर जाकर परेशानी होती है? सोचो ! तुम अब अपने—अपने घर जाओगे। किसी को वहां कोई परेशानी नहीं रहेगी। खुशी—खुशी ही जाओगे। वह राधास्वामी धाम इसी तरह से उस सुरत या जीवात्मा का घर है। वह शब्द ही सारी दुनिया की जान है। जब हम उस शब्द में पहुंच जाएंगे तो हमें शांति मिल जाएगी। इसे ही कबीर साहब ने कहा है—

हिल मिल खेलूं शब्द में, अन्तर रही न रेख।
समझों का मत एक है, क्या पंडित क्या शेख।।

जब हम वहां पहुंच जाएंगे तो कोई भी दुख तकलीफ या अशांति नहीं रहेगी।

ऐ सत्संगियो ! मेरे विचार अब दूसरे ही रहते हैं। सच पूछा जाए तो कोई—कोई अवस्था आती है। किसी किसी वक्त पर। मैं यही सोचता हूं कि या तो मैं अकेला ही ऐसी जगह पर जाऊं कि किसी को भी पता नहीं लगे या मेरे दिल में यह भी बन जाती है कि मैं किसी से भी बात नहीं करूं और एकांत में पड़ा रहूं, चुपचाप। पर मैं क्या करूं? यह गले पड़ा ढ़ोल तो बजाना ही पड़ता है। यह मेरे वश की बात नहीं है। यह गुरू महाराज का हुक्म है। यह ड्यूटी मुझे बजानी पड़ती है। किसी ने कहा—हमारा कुणबा कच्चा है। मैं कहता हूं—**तुम्हारा कुणबा पक्का है। काम तो यूं ही चलते रहेंगे। तुम्हारा काम बहुत बड़ा चलेगा। ये क्यों? क्योंकि आप लोगों की कुर्बानी है। जब तक तुम इतनी कुर्बानी करते रहोगे, तुम्हारे काम में कमी नहीं आएगी।** मेरी कुर्बानी थी। इस बात के लिए कि इस प्रकार से डेरे बन जाएं। इस तरह सत्संग हो और इस तरह भंडारे चलें। इसी तरह महात्मा गांधी की कुर्बानी थी किसलिए दी थी? शांति के लिये। मैं अपने देश को

आजाद देखूं और उसने इसको आजाद देखते ही चोला छोड़ दिया। क्या उसको नत्थू गोडसे ने मारा? नहीं। उसकी क्या हिम्मत थी। महात्मा गांधी ने तो खुद ने अपना काम बना रखा था। क्या? यही कि मैं अपने देश को आजाद देख लूं। वे आजाद देखकर चले गये। सो उनका काम ही पूरा हो चुका था। यह मारने का तो बहाना ही हो जाता है। सो अपना काम सोच कर करो। तुम्हारा अब क्या था? भाई राजीव का यह ख्याल है कि इस आश्रम में आदमी समा नहीं सकें। (इतनी संगत आए) तो क्या इसका ख्याल व्यर्थ ही जाएगा? मेरा ख्याल यह है कि यहां शांति रहे और मालिक हर वक्त दया करता रहे। महाराज शिवव्रतलाल के मोती बिखरे हुए थे। इन मोतियों के इकट्ठे करने का काम था। हालांकि शिवव्रत लाल जी ने ऐसे मोती बिखेरे हैं कि इन मोतियों को अगर समझ लिया तो भजन की भी जरूरत नहीं है। क्या मैंने यह बात गलत तो नहीं कह दी है? तुम्हारे जितने भी ग्रंथ हैं इनमें एक ही दो ग्रंथ काफी हैं। कबीर योग बनाए हैं। कबीर बीजक बनाए हैं। नानक योग और राधास्वामी योग बनाए हैं। ये ग्रंथ बड़े भारी रचे हैं। हद ही कर दी है। उन्होंने पांच हजार पुस्तकें बनाई है। उनकी रामायण देखो। कितनी गूढ़ रामायण है। तुलसी साहब की घट रामायण को फूंकने की तैयारी कर दी थी और सभी महंत इकट्ठे होकर महाराज शिवव्रतलाल के पास आए थे। उन्होंने पूछा कि क्या बात है? उन्होंने कहा—हमारी तो बेइज्जती हो रही है क्योंकि हमारी घट रामायण को कल जला दिया जाएगा। यह भी वश की बात नहीं है। सनातनी और आर्य समाजी और दूसरे सभी लोग इकट्ठे हो गए हैं। वे कहते हैं कि यह एक गंदा ग्रंथ हैं। इसे जला दो। उन्होंने पूछा—इसको गंदा कौन कहता है? उन्होंने बता दिया कि फलां आदमी कहते हैं। सो संत

तो ऐसी ही आग में पड़ते हैं। महाराज शिवव्रत लाल वहां पहुंच गए। उन्होंने वहां जाकर जवाब दिए कि यह अपनी रामायण क्या है? इसका क्या नाम है? एक रामायण महाराज शिवव्रतलाल ने बनाई थी। यह ''महारामायण'' है। तो उस वक्त उन्होंने समझा दिया कि बाहर राम यह था और अंतर में राम यह है। बाहर सीता यह थी और अंतर में सीता यह है। सभी बातों का उन्होंने निर्णय कर दिया और सब से पूछा—अब बताओ कोई आपकी शंका बाकी रह गई है? जब तुम्हें कोई शंका ही नहीं है तो क्या अब भी कोई इस ग्रंथ को हाथ लगा सकता है? यह वही तुलसी दास जी थे जिन्होंने तुलसी कत रामायण बनाई थी। ये ग्रंथ पहले बनाया था। उसे मंजूर नहीं किया और उनकी जेल करवा दी थी। यह वही है और उस रामायण में भी ऐसी बातें लिखी हैं। पर लोगों को समझ में ही नहीं आती हैं। वे दोहे कहते हैं—

कहां तक करूं मैं नाम बड़ाई।
रामन सकहिं नाम गुण गाई।।
राम ने एक तापस तिरिया तारी।
नाम ने कोटि खल कुमत सुधारी।।

यह तुलसी दास का ही वचन है। तुलसीदास जी सगुण भक्ति के बड़े माहिर थे। उसका ही काम किया सगुण भक्ति में फिर भी आखिर में नाम की ही बड़ाई कर गए और नाम की बड़ाई करके क्या किया? वे बोले कि मैं कष्ण के आगे नहीं झुकूंगा। मेरा तो एक ही ईष्ट है। मैं और भी बता देता हूं। कई सत्संगियों के घरों में फोटो देखता हूं—मैं सत्संगियों को पहचान लेता हूं। **अपना कमरा जो रहने का है वहां तो अपना ईष्ट ही रखना चाहिए। दूसरे को नहीं रखना चाहिए। अपना ईष्ट होगा तो तुम्हारी मदद होगी और सतरह फोटो होंगे तो फिर मदद नहीं होगी।**

सो अपना ईष्ट रखो। सो मैं तो स्वामी जी का फोटो रखता हूं। पर अपना ईष्ट तो ईष्ट ही होता है। तो महाराज तुलसी दास की बातें भी इस बात को सिद्ध करती हैं कि उनका अपना ईष्ट राम का था। अब कष्ण के बारें में उन्होंने यह कह दिया–

भली छवि है आपकी भले बने हो नाथ।
तुलसी मस्तक तब नवै जब धनुष बाण लो हाथ।।

तुलसी का मस्तक तो उसी वक्त नवेगा जब अपने हाथ में धनुष बाण पकड़ लोगे। ये बातें आपने संस्कत में सुनी होगी। मैं तो साधुओं, बैरागियों में जाया करता था। मुझे याद भी है।

कहां मुरली कहां चन्द्रिका कहां गोपियन के साथ।
अपने जन के कारणै कष्ण भये रघुनाथ।।

अपने भक्त के कारण ही कष्ण जी महाराज, रामचन्द्र बन गए।

धामा पति अवतारण पति राम।
सकल सुत जानकी, दासन पति हनुमान।।
कर गये धनुष चढ़ाय के कित गए सब भूप।
मग्न भई सिया जानकी देख राम का रूप।।

राम के रूप को देख कर सीता भी खुश हो गई कि यह तो राम का ही रूप है। अब ऐसी–ऐसी बातें हो जाती हैं। कितना जबरदस्त उनका ईष्ट था। पर उन्हीं ने आखिर में ये बातें कह दी–

कहां तक करूं मैं नाम बड़ाई।
राम न सकहिं नाम गुण गाई।।
नाम ने एक तापस तिरिया तारी।
राम ने कोटि खल कुमत सुधारी।।
कहां तक कहूं मैं नाम प्रभाऊ।
ता सुमरे जन त्रास नसाऊ।।

राम के प्रताप से जम की त्रास मिट जाती है। सो थोड़ी देर के लिए सत्संग दे दिया। सब बात विश्वास और श्रद्धा की है।

जिसका वकील मजबूत होगा वह झगड़ा नहीं हारेगा। वह जीत जाएगा। वह तो झूठे झगड़े को भी जिता देगा। जिसका वकील कमजोर है वह चाहे सच्चाई पर भी क्यों न हो उसको भी हरा कर बैठ जाता है।

ऐसे तुम्हें भी पता है। सतगुरु तो एक वकील का काम भी करता है। वकील पूरा होना चाहिए। सच्चे वकील यानि सतगुरु की रेडीएशन हमारे अन्दर आती है। वही रेडीएशन आप ही काम करती रहेगी। हमारा विश्वास जरूर होना चाहिए। श्रद्धा से अपना काम करते रहो। जो होना होता है वह मालिक की मौज में ही होता है।

।। राधास्वामी ।।

ध्यानाकर्षण बिन्दू

सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अतः आप सभी अपनी-2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें।

भविष्य के लिए सेवा कार्यक्रम

1	हरसाना	22 - 28 मार्च
2	सिचावली	29 मार्च - 04 अप्रेल
3	थिरपाली	05 - 11 अप्रेल
4	दादरी	12 - 18 अप्रेल
5	सिवानी	19 - 25 अप्रेल
6	हिसार	12 जनवरी - 18 जनवरी
7	हांसी	19 जनवरी - 25 जनवरी

सतगुरू प्रसाद

(परम सन्त हुजूर कंवर जी महाराज)

कुण्डलियां

1

खुद को खोज खुद अन्दर में, क्यूँ भटकता फिरता है।
पोथी-पुस्तक तीर्थ-पूजा, ये नहीं खुदा का रस्ता है।
दसवें द्वारें चढ़ अन्तर में, जहाँ तेरा साहेब बसता है।
''कँवर'' सैर करो अगम महल की, हरदम नूर बसता है।

2

सत्संग करता बाणी पढ़ता, पर गुण अक्षर एक नहीं।
मन का मैल कभी नहीं धोया, रखता गुरु की टेक नहीं।
नाम जपा ना दान किया, और करता सेवा नेक नहीं।
दास ''कँवर'' कहै बिना दीनता, मिटती कर्म की रेख नहीं।

3

ध्यान साधना वहीं करेंगे, जिनको निज घर जाना है।
इन्द्रिय-भोग की नहीं रखते आशा, सुक्ष्म पीना-खाना है।
कम सोना गम को सहना, गुरु स्वरूप का ध्याना है।
दास ''कँवर'' कहैं जीव काज, सन्तों ने यही बखाना है।

लोभ लालच

महर्षि शिवव्रत लाल जी

आज का व्यक्ति चाहता है कि वैज्ञानिक मनोवत्ति का विकास हो, क्योंकि आज वैज्ञानिक युग है। पर आज का व्यक्ति इतना रूढ़ और अज्ञान भरी धरणाओं से घिरा हुआ है।

आज दहेज की प्रथा चल रही है, भ्रूण हत्याएँ हो रही है, गर्भ मशीनों द्वारा गिराये जा रहे हैं और महिलाएँ स्वयं ही उसे बढ़ावा दे रही हैं, जब लड़का पैदा होता है, तब सारे घर में खुशियाँ मनाई जाती है, थाली बजाई जाती है, बड़े–बड़े भोजों का आयोजन किया जाता है, परन्तु जब घर में लड़की पैदा होती है, तब घर में उदासी छा जाती है और छाज पीटा जाता है। ये सब महिलाएँ ही करती हैं। इससे बड़ा आश्चर्य क्या हो सकता है? सास दहेज के प्रति जितनी जागरूक रहती है, उतना घर का कोई सदस्य नहीं रहता। स्त्री के द्वारा अपनी ही बहू की हत्या अथवा उसके द्वारा स्त्री का अपमान इसलिए होता है कि उसके साथ अज्ञान जुड़ा हुआ है।

सामाजिक बुराईयों का सबसे बड़ा कारण है, आर्थिक प्रलोभन। आदमी में लोभ की वत्ति इतनी तीव्र है कि वह सीध ा ध्न पाना चाहता है, कहीं बैंक लूटे जाते हैं, कहीं गाड़ियाँ लूटी जाती हैं, कहीं हत्याएँ होती हैं। मनुष्य यह सब क्यों करता है? केवल लोभ–लालच के लिये। जिसमें लोभ लालच नहीं है, वे इन सब बुराईयों से बचे रहते हैं। जो लोभी लालची हैं, वे व्यक्ति दुनिया में हर समय भयभीत रहते हैं।

कितना लाभ है? आदमी में भयंकर लोभ है। पत्नी ने पति से कहा–मैंने अखबार में पढ़ा है कि एक आदमी ने अपनी पत्नी

को साईकिल के बदले बेच दिया। आप तो ऐसा नहीं करेंगे? पति बोला–मैं इतना मूर्ख नहीं हूँ। यदि सौदा करूंगा तो कार का करूंगा। कार के बदले में पत्नी को बेचना लाभप्रद है। लोग लोभ लालच में पड़े रहते हैं। सब लोग लोभ से ग्रसित हैं। अनुभव होने पर भी इसका त्याग नहीं करते।

माया और छाया की दशा एक तरह की है। जो इसके पीछे भागते हैं, वह इनके पीछे लगी रहती है। जो सामने होकर इसको पकड़ना चाहते हैं, वह इनके आगे–आगे भागती है। यदि तुम ध्यान से देखोगे तो संसारी लोगों में एक भी ऐसा न मिलेगा जो अपनी छाती पर हाथ रख कर यह कह सके कि मैंने माया का भोग विलास सन्तुष्टि के साथ कर लिया है। कबीर साहब कहते हैं–

कबीर माया पापिनी, माँगे मिले न हाथ।
जो मन से इसे उतार दे, लागी डोले साथ।।
कबीर माया पापिनी, लालच में लगे लोग।
पूरी कबहु न भोगिया, इसका यही वियोगा।।

जीवन दर्शन

विचार करें कि जो समय चला गया, उस समय के सदुपयोग से हम परमात्मा प्राप्ति के मार्ग पर कितना आगे बढ़े हैं गया हुआ धन पुनः प्राप्त नहीं होता। धन की तरह समय को तिजोरी में बन्द करके भी नहीं रख सकते। अतः हर समय सावधान रहकर उसका सदुपयोग करना चाहिए।

अनमोल वचन

- **जीव को नाम देकर सतपुरुष की गोद में पहुँचाना देह स्वरूप सतगुरु का कर्त्तव्य है। सतगुरु का वास्तविक स्वरूप सतनाम है।**
  – कबीर साहिब
- **अवतार दुष्टों को मारने के लिए आते हैं, उनके अन्तर की दुष्टता का नाश करने के लिए नहीं। संत जो कि हमेशा प्रेम और करूणा से परिपूर्ण होते हैं, प्राणियों का उद्धार करने के लिए आते हैं, उनको मारने के लिए नहीं।** **– संत तुलसी साहब**
- **हमारे और परमात्मा के बीच में पर्दा किसका है? मन का। इस संसार में हमारे बड़े से बड़ा दुश्मन कौन है? मन।**
  – स्वामी जी महाराज
- **गुरु के वचन पर जो डट जाता है, उसका जीवन सफल हो जाता है।** **– परमसन्त ताराचन्द जी महाराज**

ज्ञान-सार

- **सत्संग से जितना लाभ होता है, उतना एकान्त में रहकर साधन करने से नहीं होता।**
- **सत्संग में बिना कुछ किये उन्नति होती है और कुसंग में बिना कुछ किये पतन होता है**
- **असत् का संग छोड़े बिना सत्संग का प्रत्यक्ष लाभ नहीं होता।**
- **केवल सुनने से सत्संग नहीं होता। सत्संग होता है, सत् के साथ सम्बन्ध जोड़ने से, सत् को महत्त्व देने से।**

शतावरी के पेड़ो का चमत्कार

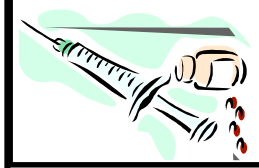

बनाने की विधि:
पाँच किलो भैंस के दूध का घर पर मावा (खोवा) बनायें (पाँच किलो दूधा का लगभग एक किलो मावा बन जाता है) मावा बनाने के लिए दूध को धीमी आँच पर रख दें। जब दूध पकत–पकते गाढ़ा–सा हो जाये और मावा बनने वाला हो तब पचास ग्राम शतावरी का चूर्ण उसमे डालकर कुछ देर तक हिलाते रहें। मावा बनने के साथ शतावरी का चूर्ण उसमें एकदिल हो जाएगा। जब मावा बनकर तैयार हो जाये तब 20–20 ग्राम के पेड़े बना ले और काँच के पात्र में सुरक्षित रख ले।

सेवन विधि–रोजाना प्रातः निराहार एक पेड़ा दूध के साथ बच्चे बड़े सभी खा सकते हैं। बारह मास इन पेड़ों का सेवन किया जा सकता है।

लाभ–शतावरी के पेड़ों के नियमित सेवन से बालको की बुद्धि, स्मरणशक्ति और निश्चय–शक्ति बढ़ती है और अच्छा विकास होता है। रूपरंग निखरता है। त्वचा मजबूत और स्वस्थ होती है। शरीर भरा–भरा पुष्ट और संतुलित होता है। फेफड़े रोग रहित और मजबूत बनते हैं। आँखों मे चमक और ज्योति बढ़ती है। शरीर की सब प्रकार की कमजोरियां नष्ट होकर अपार वीर्यवृद्धि और शुक्रवृद्धि होती है। इसके सेवन से वृद्धावस्था दूर रहती है और मनुष्य दीर्घायु होता है।

जो बच्चे रात को चौंक कर और डर कर अचानक नींद से जाग उठते हों उनके सिरहाने, तकिये के नीचे या जेब में शतावरी के पौधे की एक छोटी सी डंठल रख दें अथवा बच्चे के गले में बाँध ा दें तो बच्चा रात में नींद में डरकर या चौंककर नहीं उठेगा।

पुस्तक "स्वदेशी चिकित्सा सार" -डा. अजीत मेहता "आयुर्वेद रत्न"

सत्संग–सार

पानीपत
21. 10. 2003

आज का समय जीव के लिए बहुत ही अच्छा समय है। आज तो सन्तों ने उस पर दया करके उसको भोग और योग दोनों ही दे दिए हैं। अब पहले युगों की तरह शरीर को कष्ट देने वाली योग क्रियाएँ करने की आवश्यकता नहीं है। अब तो सहज योग द्वारा जीव के जगत और अगत दोनों बन रहे हैं। सहज योग का अर्थ ही सरलता और

शान्तिपूर्वक होने वाला योग है। इस योग से मनुष्य के जीवन की दिशा बदल जाती है और मन पवित्र हो जाता है। इसीलिए तो कहा जाता है–

पूरा सतगुरु पाइया पूरी पाई पत।
हंसदियाँ, खेड़दिया, नचदियाँ, विच्चे पाई मुक्त।।

पहले युगों में लोग जप–तप, यज्ञ–हवन, पूजा–पाठ, तीर्थ–व्रत आदि क्रियाओं में उलझे हुए थे। इनसे न ही किसी का कल्याण आज तक हुआ और न ही हो सकता है, क्योंकि इनसे मनुष्य के मन में कोई परिवर्तन नहीं आता है। वरन् मन में अभिमान आ जाता है। इसीलिए इनसे उसके जीवन की दिशा भी नहीं बदल सकती है। आज भी बहुत से लोग मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारों में जाते हैं। वहाँ पर बैठे हुए लोग सुनी सुनाई बातों को पढ़कर सुना देते हैं और अपना उल्लू सीधा कर लेते हैं। उनकी कथा–कहानियों से मन पर क्षणिक प्रभाव हो सकता है। पर जीवन की जीवन शैली

में तो कोई परिवर्तन नहीं होता है। इसीलिए ही कहते हैं–

मुसलमानाँ नूँ मुल्ला ठगदे, हिन्दुआँ नूँ ठगदे प्यान्दे।
सच्ची गल कोई नहीं दसदा, हफ्फू-२ खान्दे।।
जित्थे देख्या चोखा चंगा, मछले खूब सुनान्दे।
बुल्ला उन्हाँ की तारना, जो खुद ही डूबे जान्दे।।

सन्तों के वे शिष्य भी डूब जाते हैं, जिनके दिल में अपने कल्याण की सच्ची चाह नही है और गुरु के प्रति पूरी आस्था नहीं है। इसीलिए बहुत से ऐसे सत्संगी भी हैं, जिन्हें नाम लिए हुए कई–2 वर्ष हो गए हैं और उनके जीवन में कोई सुधार नहीं दिखता है। इसका कारण है कि उन्होंने सन्तों के सहज–योग और उनके सत्संग को नहीं समझा है। यदि सत्संगी कमरा बन्द करके अभ्यास पर तो बैठ जाता है और उसके मन में बुराइयाँ और ईर्ष्या–द्वेष भरे रखता है, तो उसके अभ्यास से तो उसकी बुराइयाँ और ईर्ष्या–द्वेष की कई गुणा बढ़ जाएँगे। इससे अच्छा तो यही है ऐसा अभ्यासी सहज–योग का साधन न करके जितना हो सके उठते–बैठते, चलते–फिरते अपना काम करते समय अपने सतगुरु के बख्शे हुए नाम का सुमरन करता रहे।

आज जीवन के कल्याण के लिए विशेष साधना की भी जरूरत नहीं है। यदि सत्संगी अपने घर में शान्ति व प्यार–प्रेम का वातावरण बनाए रखे, बूढ़े बुजुर्गों व माता–पिता की सेवा कद्र करता रहे तो उसमें ऋद्धि–सिद्धियाँ और चमत्कारों की शक्ति स्वयमेव ही आ जाएगी और उसका कल्याण भी हो जाएगा। उसकी न ही कभी कही हार नहीं होगी और न ही उसका कोई काम ही रुकेगा। सन्त तो प्यार–प्रेम, सेवा और त्याग को ही बड़ा मानते हैं, क्योंकि इनसे मन में पवित्रता आती है। सो मन के मन्दिर की पूजा ही अत्यन्त आवश्यक है। अतः बुराइयों को निकाल कर अपने मन को पवित्र करने का प्रयत्न करो।

मन मन्दिर तन भेष कलन्दर, मन की तीर्थ न्हावाँ।
एक शब्द मेरे घट में बसत है, बहुरि जन्म नहीं आवाँ।।

सतगुरु कृपा

''राधास्वामी! मैं आप सभी को परमसन्त हुजूर महाराज कंवर सिंह जी महाराज के बारें में बताती हूँ कि किस प्रकार वे हम संसारी जीवों पर दया करते हैं और वे पल-पल हमारा मार्ग-दर्शन करते हैं। जून 2003 को मैं अपने भाई के पास यमुनानगर मिलने चली गई, तो मेरी भाभी ने मुझे अपनी पायलें जो काफी भारी थी, देकर कहा कि दीदी ये पायलें आप दोबारा अपने पड़ोस में रहने वाले सुनार से बनवा दें, क्योंकि ये कुछ घिस कर टूट गई हैं। अगले दिन मैं उन्हें लेकर अपने घर वापिस आ गई और सम्भाल कर बेड के लॉकर में रख दिया। कुछ दिनों बाद दोबारा यमुनानगर जाने का प्रोग्राम बन गया। मैंने सोचा कि वो पायलें, जो भाभी ने दी थी, उन्हें बनवाने दे आऊँ। मैंने लॉकर खोला तो मैं हैरान रह गई, क्योंकि वो वहाँ नहीं थी। मैंने घर में सभी से पूछताछ की तथा हर जगह उनको तलाश किया, परन्तु कहीं नहीं मिली। रिश्तेदारी का उलाहना सिर था। अगले दिन यमुनानगर भाई के पास चली गई वहाँ जाकर उन्हें सारी बात बताई तो भाई ने कहा-चलो, कोई बात नहीं। (आखिर भाई जो था) परन्तु मुझे तसल्ली नहीं हुई। कुछ दिनों बाद वापिस घर चली आई। यहाँ आकर फिर उनको तलाश किया, परन्तु सब बेकार। एक दिन सुबह-सुबह मेरे पति ड्यूटी पर जाने वाले थे, तो मैंने अपने दिल की बात फिर उनको बता दी। मेरे पति ने मुझे कहा कि गुरु महाराज जी तो बड़े दयालु हैं, तू उनसे विनती क्यों नहीं करती? मेरी आँखों में आँसू निकल आए और मैंने एकान्त में हुजूर महाराज जी की फोटो के सामने, हाथ जोड़ कर सच्चे मन से विनती की। अचानक मुझे हुजूर महाराज जी की आवाज सुनी-**''मैं 15 दिनों से तेरी उन पायलों की रखवाली कर रहा हूँ। वे पायले पिछले प्लाट में जो खाली है, वहाँ पड़ी**

है। तू अपनी पायलों को उठा ला। तूने मेरे प्रसाद को भी उन पायलों के साथ फेंक दिया था। उसी कारण से तुझे यह सजा मिली है।''

दरअसल मैंने गलती से एक दिन सफाई करते समय उसे रद्दी कागज समझ कर (प्रसाद जो एक कागज में था) पायलों समेत फेंक दिया था। मैं दौड़ी-दौड़ी आँखों में आँसू भर कर वहीं पर गई। जहाँ गुरु महाराज जी ने कहा था। मैं जैसे ही वहाँ झुकी तो प्लाट में एक गढ्ढे के ऊपर ही एक फटे से लिफाफे को उठा लिया। उठाते ही मैंने समझ लिया कि इसमें पायलें ही हैं। जैसे ही मैंने उसे खोला तो मैं वहीं पर सन्न रह गई और मेरे रोम-रोम में सरसराहट दौड़ गई और आँखों से आँसूओं की धार बह निकली। उसमें सचमुच ही पायलों के साथ में प्रसाद भी था। वह प्रसाद स्वयं महाराज जी के हाथों से लिया गया था, क्योंकि मेरी एक गुरुबहन जो दिनोद सेवा पर गई थी, उसने मुझे वह प्रसाद लाकर दिया था। मैंने कुछ उसमें से बाँट दिया तथा कुछ रख दिया था और फिर भूल गई थी। मेरे घर में असीम खुशी का माहौल था, इसलिए नहीं कि मेरा नुकसान होने से बच गया, बल्कि इसलिए कि रिश्तेदारी में सच्चाई रह गई और यह इज्जत गुरु महाराज जी की दया से ही रही। मैं जब भी उस घटना को याद करती हूँ तो उनकी मुझ पर वह दया याद आती है। हम यह महसूस करते हैं कि वे हमारी पल-पल रक्षा करते हैं और हर घड़ी हमारे साथ रहते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि महाराज जी की हम जैसे संसारी जीवों पर कितनी दया है !

राधास्वामी।

सन्तोष धीमान
म.न. 1310/12, गली न. 1,
शान्ति नगर, कुरूक्षेत्र।

नोट :- जिस किसी सत्संगी भाई के साथ इस प्रकार सतगुरु दया की घटना घटी हो तो प्रमाण सहित दिनोद धाम में भाई बलबीर सिंह को दे सकते हैं।

राधास्वामी संत संदेश | 15 दिसम्बर, 2003 | अंक : 80

कहानी

एक लड़का था। माँ ने उसका विवाह कर दिया। परन्तु वह कुछ कमाता नहीं था। माँ जब भी उसको रोटी परोसती थी, तब वह कहती कि बेटा, ठण्डी रोटी खा लो। लड़के की समझ में नहीं आया कि माँ ऐसा क्यों कहती है। फिर भी वह चुप रहा। एक दिन माँ किसी काम से बाहर गयी तो जाते समय लड़के की बहू को कह गई कि जब लड़का आये तो उसको रोटी परोस देना और कह देना कि ठण्डी रोटी खा लो। उसने अपने पति से वैसा ही कह दिया तो वह चिढ़ गया कि माँ तो कहती ही है, यह भी कहना सीख गई। वह अपनी स्त्री से बोला कि बता रोटी ठण्डी कैसे हुई? रोटी भी गर्म है, दाल साग भी गर्म है, फिर तू ठण्डी रोटी कैसे कहती है? वह बोली कि यह तो आपकी माँ जाने। आपकी माँ ने मेरे को ऐसा कहने के लिए कहा था, इसलिए मैंने कह दिया। वह बोला कि मैं रोटी नहीं खाऊँगा। माँ तो कहती ही थी, तू भी सीख गई।

माँ घर आयी तो माँ से लड़के ने पूछा कि माँ तू तो रोजाना कहती थी कि ठण्डी रोटी खा ले और मैं सह लेता था, अब यह भी कहना सीख गयी। माँ ने पूछा कि ठण्डी रोटी किसको कहते हैं? वह बोला-सुबह की बनाई गई रोटी शाम को ठण्डी होती है। ऐसे ही एक दिन की बनाई हुई रोटी दूसरे दिन ठण्डी होती है। बासी रोटी ठण्डी और ताजी रोटी गर्म होती है। माँ ने कहा-बेटा, अब तू विचार करके देख। तेरे बाप की जो कमाई है, वह ठण्डी, बासी रोटी है। गर्म, ताजा रोओ तो तब होगी, जब तू खुद कमाकर लायेगा। लड़का समझ गया और माँ से बोला कि अब मैं खुद कमाऊँगा और गर्म रोटी खाऊँगा।

इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि विवाह होने के बाद ठण्डी रोटी नहीं खानी चाहिये, अपनी कमाई की रोटी खानी चाहिये। इसलिए विवाह तभी करना चाहिए, जब स्त्री का और बच्चों का पालन-पोषण करने की ताकत हो। यह ताकत न हो तो विवाह नहीं करना चाहिए।

आवश्यक सूचना

'राधास्वामी संत संदेश' मासिक पत्रिका के सदस्यों (पाँच वर्षीय व आजीवन सदस्यों को छोड़कर) को सूचित किया जाता है कि सभी सदस्यों की सदस्यता दिसम्बर **2003** में समाप्त हो रही है। अतः निवेदन है कि सभी सदस्य **15** दिसम्बर **2003** तक अपनी सदस्यता ग्रहण कर लें। अगले वर्ष यानी **1** जनवरी **2004** से **31.12.2004** तक के सदस्यों की अग्रिम रसीद काटनी शुरू कर दी है, कोई भी सदस्य वार्षिक शुल्क **40** रुपये, **5** वर्षीय **200** रुपये व आजीवन रुपये नगद, बैंक ड्राफ्ट या मनिआर्डर भेजकर पत्रिका की सदस्यता ग्रहण कर सकता है। जो बहन, भाई मार्च **2004** के बाद सदस्यता के लिए बैंक ड्राफ्ट या मनिआर्डर भेजेंगे उनकी पत्रिका उसी महीने की **15** तारीख को डाक से भेजनी शुरू कर दी जायेगी, परन्तु इससे पहले की पत्रिका सदस्यों को आश्रम में स्वयं प्राप्त करनी होगी, पीछे की पत्रिका डाक द्वारा नहीं भेजी जायेगी।

अतः सभी से अनुरोधा है कि वे अपनी सदस्यता **15** दिसम्बर **2003** तक अवश्य ले लें। शुल्क भेजने का पता-

सचिव, राधास्वामी सत्संग (दिनोद),
रोहतक रोड़, भिवानी

नोट : मनिआर्डर भेजने वाले प्रेमियों से प्रार्थना है कि नीचे वाले कूपन पर अपना पूरा पता साफ-2 लिखें।

राधास्वामी सत्संग (दिनोद)
सत्संग सूची वर्ष 2004

26 जनवरी	सोमवार (बसंत पंचमी)	अण्टा
6 फरवरी	शुक्रवार (पूर्णमासी)	सिवानी
29 फरवरी	रविवार (वार्षिक)	भिवानी
13 अप्रैल	मंगलवार (वैशाखी)	हाँसी
2 मई	रविवार	भिवानी
2 जुलाई	शुक्रवार (गुरु पूर्णिमा)	भिवानी
30 अगस्त	सोमवार (रक्षा बंधन)	दादरी
7 अक्तूबर	गुरुवार (भण्डारा अरमान साहब जी)	दिनोद
13 अक्तूबर	बुधवार (जन्म दिन बड़े महाराज जी)	दिनोद
23 अक्तूबर	शनिवार (दशहरा)	नजफगढ़ (दिल्ली)
14 नवम्बर	रविवार (भैयादूज)	सोनीपत
26 नवम्बर	शुक्रवार (वार्षिक)	भिवानी

जीवों को बीमारी क्यों होती है?

भाग -2

महर्षि शिवव्रत लाल जी

मल के दूर करने और मन तथा शरीर को सूक्ष्म बनाने के लिये।

जब शरीर में ऐसे गन्दे पदार्थ प्रवेश कर जाते हैं तब दो हालातें होती हैं।

(अ) शरीर या शारीरिक व्यवस्था उनके दूर करने के लिए प्रयत्न करते हैं।

(ब) उनको अपने में शामिल करने या सोख लेने की कोशिश करते हैं। क्या तुम नहीं देखते कि शरीर के किसी भाग में जब कोई अन्य विजातीय वस्तु पहुंच जाती है तो उसे दर्द होता है और वह उसे निकालना चाहता है। यदि वह नहीं निकालता तो उसमें पड़ा रहता है और गांठ पड़ जाती है तथा फिर तरी या वर्षा ऋतु में अनुकूल सामान पाकर वह उभर खड़ी होती है। यदि आंख में किरकरी पड़ गई तो उसको सोख लेने वाली रूतूवत आंख से निकलनी शुरु हुई। या तो वह किरकरी बहकर दूर हो जायेगी या आंख की पैबन्द बन जाएगी।

अनावश्यक सामान ही गन्दा पदार्थ बनता है और गन्दगी उत्पन्न करता रहता है। ऐसे आदमी शान्त नहीं रह सकते। इनके शरीर के कल पुर्जे बिगड़ जायेंगे। वह समझ बूझ से खाली रहेंगे। परमार्थ का समझना तो कठिन होगा, वह व्यवहार के योग्य भी न रहेंगे। रोग इन दोषों के निकालने का प्राकतिक इलाज है। यदि मनुष्य अपने आप सोच समझकर पवित्र नहीं बनता तो, बिमारी पैदा होने का कारण है। यह काम जिस तरह प्रकति के समस्त व्यवहार में दिखाई पड़ता है उसकी वही क्रिया हमारे शरीर में होती है इसी को बिमारी कहते हैं।

क्रमशः

जीवन दर्शन

विचार करें कि जो समय चला गया, उस समय के सदुपयोग से हम परमात्मा प्राप्ति के मार्ग पर कितना आगे बढ़े हैं गया हुआ धन पुनः प्राप्त नहीं होता। धन की तरह समय को तिजोरी में बन्द करके भी नहीं रख सकते। अतः हर समय सावधान रहकर उसका सदुपयोग करना चाहिए।

आगामी सत्संग कार्यक्रम

13 अप्रेल	मंगलवार (वैशाखी)	हांसी
02 मई	रविवार	भिवानी